एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 03 (मई-जून, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्वार की उन्नत खेती

(*डॉ. मीनू, डॉ. गुलाब सिंह, डॉ. मुरारी लाल, डॉ. ममता फोगाट एवं डॉ. करिश्मा नंदा)
कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mmeenu17@gmail.com

ग्वार हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में उगाई जाने वाली मुख्य लेग्यूमिनेसी फसल है | इसके फूलो का आकार छोटा और रंग गुलाबी होता है तथा फलियों की ऊपरी सतह रोएंदार होती है | ग्वार के एक पौधे से लगभग 110 से 133 फलिया प्राप्त होती है | 100 ग्राम ग्वार की फलियों में 81ग्राम पानी, 3.2 ग्राम रेशा, 3.2 ग्राम प्रोटीन, 10.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.4 ग्राम खनिज और 0.4 ग्राम वसा पाया जाता है |इसके अलावा कुछ पोषक तत्व जैसे 1.08 मिलीग्राम आयरन, 130 मिलीग्राम कैल्शियम, 57 मिलीग्राम फास्फोरस, विटामिन सी, थाइमिन और फोलिक अम्ल भी मौजूद होता है | इसमे 30-35 प्रतिशत गोंद भी पाया जाता है जो औद्योगिक दृशी से काफी महत्वपूर्ण है। ग्वार को जानवरो के लिए भी हरे चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। दूसरी फसलों की तुलना में इसकी खेती बहुत ही सरलता से की जा सकती है| इसे कम **सिंचाई** वाले स्थानों पर भी आसानी से उगाया जा सकता है|

भूमी की तैयारी: ग्वार की खेती उचित जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी में की जा सकती है| इसकी फसल सिंचित और असिंचित दोनों ही जगहों पर आसानी से उगाई जा सकती है | अच्छी पैदावार के लिए इसकी जुटाई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में एक या दो जुताइयाँ देसी हल से करनी चाहिए।

बीजाई का समय: पछेती बीजाई के लिए मध्य जुलाई उपयुक्त समय है। एच जी 365 व एच जी 563 की बीजाई जून के दूसरे पखवाड़े में कर देनी चाहिए। एच जी 870 व एच जी 2-20 की बीजाई जुलाई के प्रथम पखवाड़े में करनी चाहिए। जुलाई के तीसरे सप्ताह के बाद पैदावार में काफी कमी आ जाती है।

बीज उपचार: ग्वार के बीज को भी अन्य दलहानी फसलों की तरह राइज़ोबियम व पी. एस. बी. कल्चर से उपचारित करना चाहिए। इसके बाद 6 किलो बीज, 6 लीटर पानी और 6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लीन को 25-30 मिनट तक भिगोएँ। बाद में 30-40 मिनट बीज को छाया में सुखाकर बीजाई करें।

बीज मात्रा: अगेती पकने वाली किस्मों के लिए 5-6 किलो बीज प्रति एकड़, मध्यम अवधि के लिए 7-8 किलो प्रति एकड़ बीज उपयुक्त रहता है।

उर्वरक: बीजाई के समय 16 किलो फास्फोरस व 8 किलो नाइट्रोजन प्रति एकड़ के हिसाब से डालें यदि भूमि में गंधक की कमी है तो 8 किलो गंधक प्रति एकड़ बीजाई के समय दें।

सिंचाई: ग्वार की फसल को अधिक **सिंचाई** की जरूरत नहीं होती है। अगर बिलकुल सिंचाई न हुई हो तो फलियाँ बनने के समय एक सिंचाई दें।

ग्वार की फसल में खरपतवार नियंत्रण: ग्वार की फसल में **खरपतवार** नियंत्रण की अधिक जरूरत होती है| इसलिए खेत में समय-समय पर **निराई – गुड़ाई (25-30 दिन बाद)** करना होता है, ताकि पौधों की जड़ो का विकास ठीक तरह से हो सके और जड़ो में ताज़ी हवा भी पहुंच सके | इसके अलावा रासायनिक तरीके से खरपतवार को रोकने के लिए 800 मी. ली. बेसालिन की मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

ग्वार की फसल रोग एवं रोकथाम

सफ़ेद मक्खी एवं हरा तेला रोग: सफ़ेद मक्खी ओर हरे तेले से बचाव के लिए पौधों पर 200 मी. ली. मेलाथिओन 50 ई. सी. को 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। छिड़ काव के बाद चारे वाली फसल को कम से कम 7 दिनों तक पशुओं को न खिलाएँ।

बैक्टीरियल ब्लाइट: इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर गोल आकार के धब्बे दिखाई देने लगते है| नमी के मौसम में ये धब्बे आपस में मिलकल बड़े आकार के हो जाते हैं। बाद में ये धब्बे तनों व फलियों पर भी दिखाई देने लगते हैं। इस रोग से ग्रसित पौधे सूख जाते हैं। ग्वार के पौधों को इस रोग से बचाने के लिए बीज को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की उचित मात्रा से उपचारित कर ले | इसके अतिरिक्त रोग प्रतिरोधक किस्मो का चुनाव करना चाहिए |

- बीजाई के 8 सप्ताह बाद या बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 30 ग्राम प्रति एकड़ एवं कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 ग्राम प्रति एकड़ को 200 लीटर पानी में मिलकर 15-20 दिन के अंतराल पर 2 छिड़काव अवश्य करें।

जड़ गलन रोग: इस क़िस्म का रोग अक्सर ग्वार की फसल में अधिक समय तक जलभराव होने की स्थिति में देखने को मिलता है| यह फफूंद के रूप में पौधों को प्रभावित करता है, जिससे पौधों की जड़े गलने लगती है, और पौधा कुछ समय पश्चात् ही सूखकर गिर जाता है | इस रोग से बचाव के लिए बीजो को मेंकोजेब या थाइरम की उचित मात्रा से उपचारित कर ले |

ग्वार के फसल की कटाई: ग्वार के फसल की तुड़ाई जरूरत के अनुसार की जाती है | यदि आप हरी सब्जी के रूप में फसल प्राप्त करना चाहते है, तो उसके लिए आपको 55 से 70 दिनों में मुलायम फलियों की अवस्था में तुड़ाई करनी चाहिए | चारे के रूप में फसल को प्रयोग करने के लिए पौधों पर फूल आने के दौरान उनकी कटाई कर ले | फसल से दानो को प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से फसल के पक जाने पर ही तुड़ाई करे |